हिन्दू विधि

डॉ. योगेन्द्र कुमार तिवाड़ी

कैलाशचन्द्र शर्मा • डॉ. महेन्द्र तिवाड़ी

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

॥ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ॥

विषय-सूची

क्र.सं. विषय	पृष्ठ संख्या
• प्रकाशकीय	v
• प्राक्कथन	vii
• प्रस्तुति	ix-x
• उद्धृत प्रमुख निर्णय क्रमणिका	xviii-xxxxv
1. हिन्दू-विधि-प्रकृति, विकास, संकल्पना एवं क्षेत्र	1 से 16
हिन्दू विधि की प्रकृति	
हिन्दू विधि का विकास	
हिन्दू सामाजिक व्यवस्था	
हिन्दू-विधि की संकल्पना	
हिन्दू-विधि का क्षेत्र	
हिन्दू कौन है?	
अधिनियमित विधि से	
धर्म से	
धर्म परिवर्तन से	
पति परिवर्तन से	
माता-पिता में से एक हिन्दू	
जनजाति एवं हिन्दू विधि	
2. हिन्दू-विधि के स्त्रोत	17 से 32
श्रुति	
स्मृति	
प्राचीन स्मृतियाँ	
आधुनिक स्मृतियाँ	
भाष्य एवं टीकाएँ	
रूढ़ियाँ एवं प्रथाएँ	
रूढ़ि सिद्ध करने का भार	
साम्य, न्याय एवं स्वविवेक	

न्यायिक पूर्वोक्ति
विधायन

3. हिन्दू-विधि की शाखाएँ, अधिवास, प्रवास एवं धर्म-परिवर्तन — 33 से 42

मिताक्षरा शाखा
दायभाग शाखा
मिताक्षरा एवं दायभाग में अन्तर
अधिवास एवं प्रवास
धर्म-परिवर्तन
फैक्टम-वेलेट का सिद्धान्त

4. विवाह-प्रकृति, आवश्यक शर्तें एवं प्रभाव — 43 से 97

विवाह की प्रकृति
विवाह एक पवित्र बन्धन
विवाह सिविल संविदा
विवाह के प्रकार
शास्त्रिक विधि में मान्य विवाह
अनुलोम विवाह
प्रतिलोम विवाह
हिन्दू-विवाह की मान्य शर्तें
विवाह के संस्कार
विवाह के प्रभाव
शून्य विवाह
आधार
कौन आवेदन कर सकता है?
शून्यकरणीय विवाह
आधार
शून्य व शून्यकरणीय विवाह की संतानों की स्थिति
शून्य व शून्यकरणीय विवाह में अन्तर
विवाह की शर्तों की अवहेलना पर दण्ड

5. विवाह-विषयक उपचार — 98 से 214

दाम्पत्य अधिकारों का प्रत्यास्थापन
आवश्यक शर्तें
पारस्परिक सहमति से डिक्री
डिक्री का निष्पादन

सेवारत पत्नी एवं दाम्पत्य-अधिकारों का प्रत्यास्थापन
संवैधानिक वैधता
न्यायिक पृथक्करण
आधार
न्यायिक पृथक्करण एवं विवाह-विच्छेद में अन्तर
विवाह-विच्छेद
विवाह-विच्छेद के सिद्धान्त
विवाह-विच्छेद के आधार
पत्नी को उपलब्ध विशेष आधार
पारस्परिक सहमति के आधार पर विवाह-विच्छेद
न्यायालय को उचित उपचार देने का अधिकार
वैवाहिक उपचार प्राप्त करने में अवरोध
प्रतिवादी को याची की याचिका में उपचार
आनुषंगिक वैवाहिक उपचार
अन्तरिम भरण-पोषण
स्थायी निर्वाह एवं भरण-पोषण
सन्तानों की अभिरक्षा
सम्पत्ति का व्ययन
न्यायालय का क्षेत्राधिकार एवं प्रक्रिया
डिक्री व आदेशों की अपील

6. दत्तक **215 से 242**

शास्त्रिक विधि में दत्तक
दत्तक का उद्देश्य
दत्तक कौन ले सकता था?
दत्तक कब लिया जा सकता था?
दत्तक में किसे लिया जा सकता था?
दत्तक की औपचारिकता
दत्तक का प्रभाव
अधिनियम के पश्चात् दत्तक-ग्रहण
मान्य दत्तक की अपेक्षाएँ
हिन्दू-पुरुष द्वारा दत्तक ग्रहण की योग्यता
हिन्दू-स्त्री द्वारा दत्तक-ग्रहण की योग्यता
दत्तक देने के लिए सक्षम व्यक्ति
देने वाला लेने वाला नहीं हो सकता
दत्तक में लिये जाने वाले बालक की योग्यता

मान्य दत्तक की अन्य शर्तें
दत्तक के प्रभाव
पूर्वसम्बन्ध का सिद्धान्त
दत्तक पुत्र के सम्बन्ध
दत्तक-प्रपत्र का पंजीकरण

7. **अवयस्कता एवं संरक्षकता** **243 से 265**

अवयस्क
संरक्षक
संरक्षक के प्रकार
प्राकृतिक संरक्षक
संरक्षक के अवयस्क वय के सम्बन्ध में अधिकार
संरक्षक का अवयस्क के भरण-पोषण का दायित्व
अवयस्क की सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्राकृतिक संरक्षक की शक्ति
वसीयती संरक्षक
न्यायालय द्वारा नियुक्त एवं घोषित संरक्षक
कोर्ट ऑफ वार्ड्स से सम्बन्धित अधिनियम में नियुक्त संरक्षक
तथ्यतः संरक्षक
वैवाहिक सम्बन्ध के संरक्षक
अवयस्क का कल्याण सर्वोपरि

8. **भरण-पोषण** **266 से 287**

प्राचीन हिन्दू-विधि में भरण-पोषण
भरण-पोषण मृतक की सम्पत्ति पर भार
सहदायिक सम्पत्ति व भरण-पोषण का भार
अधिनियमित विधि में भरण-पोषण
हिन्दू पत्नी का भरण-पोषण
पृथक् भरण-पोषण
अयोग्यता
विधवा पुत्रवधु का भरण-पोषण
वृद्ध माता-पिता व संतानों का भरण-पोषण
आश्रितों का भरण-पोषण
भरण-पोषण की राशि

9. **संयुक्त हिन्दू परिवार, सम्पत्ति और विभाजन** **288 से 304**

संयुक्त हिन्दू परिवार
हिन्दू सहदायिकी

संयुक्त हिन्दू परिवार एवं सहदायिकी में अन्तर
अप्रतिबन्ध दाय
सप्रतिबन्ध दाय
अविभाज्य सम्पदा
स्वयं अर्जित सम्पत्ति
संयुक्त परिवार का कर्त्ता
कर्त्ता के अधिकार
सहदायिकों के सम्पत्ति के सम्बन्ध में अधिकार

10. अंतरण, पवित्र दायित्व एवं ऋण **305 से 322**

अन्तरण
कर्त्ता का सहदायिकी सम्पत्ति के अन्तरण का अधिकार
वैधानिक आवश्यकता
सम्पत्ति का लाभ
परिवार का व्यवसाय
अनिवार्य दायित्वों का पालन
पिता के कर्त्ता होने पर अन्तरण का अधिकार
सहदायिक द्वारा अविभाजित हित का अन्तरण
हिन्दू-स्त्री द्वारा स्त्री-सम्पदा का अन्तरण
मैनेजर या न्यासी का न्यास-सम्पत्ति के अंतरण का अधिकार
ऋण
विधिक दायित्व
पवित्र दायित्व
अव्यावहारिक ऋण
पूर्ववर्ती ऋण
दमदूपत

11. विभाजन **323 से 342**

मिताक्षरा विधि
विभाजन से तात्पर्य
विभाजन की विषय-वस्तु
विभाजन के प्रकार
विभाजन की माँग कौन कर सकता है?
विभाजन में अंश पाने के अधिकारी व्यक्ति
विभाजन कैसे होता है?
अंशों का निर्धारण

1937 से पूर्व की स्थिति
1937 से 1956 के बीच की स्थिति
1956 के बाद की स्थिति
विभाजन को पुनः खोलना
परिवार का पुनः संयुक्त होना
अविभाज्य सम्पदा
दायभाग में विभाजन एवं सहदायिकी

12. स्त्री-धन एवं स्त्री-सम्पदा 343 से 354

स्त्री-धन
स्त्री-धन पर अधिकार
स्त्री-धन का न्यागमन
स्त्री-सम्पदा
हिन्दू-स्त्री का अधिकार
उत्तरभोगी का अधिकार
स्त्रीधन एवं स्त्री-सम्पदा में अन्तर

13. उत्तराधिकार 355 से 413

मिताक्षरा विधि में उत्तराधिकार
दायभाग विधि में उत्तराधिकार
मिताक्षरा एवं दायभाग विधि में अन्तर
मिताक्षरा एवं दायभाग विधि में अयोग्यता
हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के अन्तर्गत उत्तराधिकार
प्रमुख परिभाषाएँ
मिताक्षरा सहदायिक सम्पत्ति में हित का उत्तराधिकार
हिन्दू-पुरुष की सम्पत्ति का उत्तराधिकार
हिन्दू-स्त्री की सम्पत्ति
हिन्दू-स्त्री की सम्पत्ति का उत्तराधिकार
उत्तराधिकार के साधारण नियम
उत्तराधिकार की अयोग्यता,
वसीयती उत्तराधिकार

14. दान और इच्छा-पत्र 414 से 421

दान
बेनामी व्यवहार
इच्छा-पत्र

15. **धार्मिक एवं पुण्यार्थ विन्यास** 422 से 432

धार्मिक विन्यास की अर्हताएँ

विन्यास कैसे निर्मित हो

मठ

महन्त

देवोत्तर सम्पत्ति

सेवायत

साइप्रस का सिद्धान्त

16. **पारिवारिक न्यायालय** 433 से 436

17. **दहेज-प्रथा** 437 से 441

• **परिशिष्ट** 442 से 450

❑❑❑